

**एक मुखी/एक मुँहा वि.** (तत्.) एक मुख वाला, जिसका एक ही मुँख हो, एकमुखी रुद्राक्ष।

**एकमुश्त वि.** (तत्.+फा.) बाणि. कई किस्तों या कई बार न दिया जाकर जो एक ही बार में दिया जाए।

**एकमेक वि.** (तत्.) किसी के साथ मिलकर एक हो जाना

**एकमेव वि.** (तत्.) एकमात्र, एक ही।

**एकमोला वि.** (तत्.+तद्.) निर्धारित एक ही मूल्य वाला, जिसमें मोल भाव न करना हो।

**एकयुग्मजीव वि.** (तत्.) प्राणि. जो एक ही निषेचित अंडे से उत्पन्न होते हैं।

**एकरंगा वि.** (तद्.) एक ही रंग वाला।

**एकरंगी वि.** (तद्.) 1. एक रंग का, एकरूप 2. सच्चा, कपटहीन (फा.) एकरंगी।

**एकरस वि.** (तत्.) 1. जो सदा एक जैसा रहे, कभी बढ़े घटे नहीं 2. जो किसी के साथ मिल कर एक हो गया हो।

**एकरसता वि.** (तत्.) एक जैसा होने की स्थिति, समानता, अभेदता।

**एकरात्र पुं.** (तत्.) एक ही रात्रि का कार्यक्रम, एक रात्रि, एक ही रात्रि में पूरा होने वाला कार्य (यज्ञादि)।

**एकरुखी/एकरुखा वि.** (तत्.+फा) 1. जिसका मुँह एक ही ओर हो, एकतरफा, जिसकी एक ही दिशा हो 2. वस्त्र, कागज आदि जिस पर एक ही ओर बेल-बूटे आदि बने हों।

**एकरूप वि.** (तत्.) 1. समान रूप वाला, जो सभी अवस्थाओं में समान हो 2. अपरिवर्तनशील, हमेशा एक सा रहने वाला।

**एकरूपता स्त्री.** (तत्.) 1. एक रूप होने की अवस्था या भाव 2. सायुज्य।

**एकरूपिणी वि.** (तत्.) एक रूप वाली, जिसके अनेक रूप न हो।

**एकरूपिता स्त्री.** (तत्.) रसा. किसी पदार्थ का अनेक क्रिस्टलीय रूपों में पाया जाना जिनमें से केवल एक स्थाई होता है और शेष अस्थायी रूप में कुछ समय रहकर स्वयं स्थायी रूप में बदल जाते हैं।

**एकरेखीय वि.** (तत्.) 1. एक रेखा वाला, सरल रेखा में होने वाला 2. निरंतर प्रगतिशील।

**एकल वि.** (तत्.) 1. एकाकी, अकेला 2. बेजोड़, अनुपम, अद्वितीय।

**एकल अभिकर्ता वि.** (तत्.) बाणि. विनिर्माता द्वारा किसी क्षेत्र या देश विशेष में अपने उत्पाद की बिक्री के लिए नियुक्त अनन्य व्यक्ति या व्यावासायिक प्रतिष्ठान। solo agent

**एकल पीठ स्त्री.** (तत्.) विधि. न्यायालय में प्रस्तुत वाद की सुनवाई के लिए गठित एक सदस्य वाली खंडपीठ। single member bench

**एकल शाखी वि.** (तत्.) एक शाखा वाला पुं. बन. ससीमाक्षी पुष्पक्रम जिसमें अंत्य पुष्प के नीचे से केवल एक ही शाखा निकलती है। monochasium

**एकलक वि.** (तत्.) रसा. एकल अणु अथवा एकल अणुओं वाला पदार्थ जिसका अणुभार कम और संरचना अपेक्षाकृत सरल होती है। monamer

**एकलव्य वि.** (तत्.) महाभारत काल का एक निषाद जिसने द्रोणाचार्य की मूर्ति को अपना गुरु मानकर उसके सामने बाणविद्या सीखी और बाद में उनके मांगने पर गुरु दक्षिणा के रूप में अपना दायाँ अँगूठा काट कर दे दिया।

**एकला वि.** (तद्.) 1. अकेला, एकाकी, अकेला रहने वाला 2. एक व्यक्ति द्वारा 3. बेजोड़, अद्वितीय, अनुपम।

**एकलिंग पुं.** (तत्.) 1. जो (शब्द) सदैव एक ही लिंग में प्रयुक्त होता हो 2. एकलिंगी, शिवलिंग जो मेवाड़ के गहलौत राजपूतों के कुल देवता है।